# 2. वचन (Number)

## हम क्या जानेंगे

वचन का अर्थ, प्रकार, वचन की पहचान, विभक्ति रहित तथा विभक्तियुक्त बहुवचन का परिचय, नित्य एकवचन तथा नित्य बहुवचन शब्द, वचन परिवर्तन के नियम, वचन से जुड़ी कुछ सामान्य अशुद्धियाँ।

## चलें पाठ की ओर

सही भाषा प्रयोग

*नीचे दिए गए गद्यांश के रंगीन अंशों में कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं। आप इन अशुद्धियों को दूर कीजिए-*

यह पुस्तकें आप देख रहे हैं। इन पुस्तक में बहुत-सी रोचक कहानी हैं। बचपन में ऐसी कहानियाँ पढ़ने का अलग ही मज़ा होता है और इसे पढ़ने से आपकी कल्पनाशक्ति भी बढ़ती है। इस उम्र में प्रतिदिन कुछ पृष्ठ पढ़ने से मात्रा व शब्द का ज्ञान भी सरलता से हो जाता है।

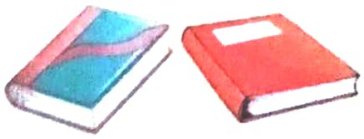

**शिक्षण-संकेत–** बच्चों से प्रश्न पूछें कि ये अशुद्धियाँ किससे जुड़ी हैं? बातचीत के उपरांत उनका ध्यान वचन की ओर आकर्षित करते हुए उन्हें पाठ की ओर ले चलें।

## पाठ

यह नदी हिमालय से निकलती है। इस नदी में बारह महीनों पानी रहता है। इससे निकाली गई नहर से सिंचाई की जाती है। यह नहर खेतों में खड़ी फ़सल के लिए किसी वरदान से कम नहीं होती है।

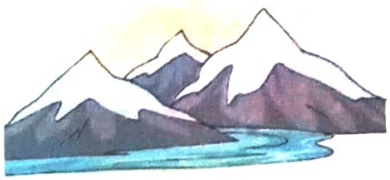

ये नदियाँ हिमालय से निकलती हैं। इन नदियों में बारह महीनों पानी रहता है। इनसे निकाली गई नहरों से सिंचाई की जाती है। ये नहरें खेतों में खड़ी फ़सलों के लिए किसी वरदान से कम नहीं होती हैं।

ऊपर दिए गए पहले गद्यांश के रंगीन अंशों यह नदी, निकलती है, इस नदी, इससे, नहर से, यह नहर, फ़सल के लिए, है आदि शब्दों के रूप से इनके संख्या में एक होने का पता चल रहा है, इसलिए ये सभी शब्द एकवचन हैं, जबकि ये नदियाँ, निकलती हैं, इन नदियों में, इनसे, नहरों से, ये नहरें, फ़सलों के लिए होती हैं आदि शब्दों के रूप से इनके संख्या में अनेक होने का पता चल रहा है, इसलिए ये सभी शब्द बहुवचन हैं। व्याकरण में वचन का अर्थ संख्या होता है। अतः

**शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का पता चलता है, उसे 'वचन' कहते हैं।**

परिभाषा

## वचन के भेद

**वचन के दो भेद होते हैं–** (क) एकवचन (ख) बहुवचन

शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का पता चलता है, उसे 'एकवचन', जबकि शब्द के रूप से उसके अनेक होने का पता चलता है, उसे 'बहुवचन' कहते हैं; जैसे– थैला, गद्दा, चादर, चाबी आदि (एकवचन) तथा थैले, गद्दे, चादरें, ताले, चाबियाँ आदि (बहुवचन)।

**बहुवचन दो प्रकार के होते हैं–**

**(क) सामान्य बहुवचन–** सामान्य बहुवचन रूप में शब्द के आगे और कुछ नहीं आता। यानी रूप बिना किसी सहारे के पूर्ण होता है; जैसे– पौधा-पौधे, दरवाज़ा-दरवाज़े, फल-फल, मेज़-आदि।

**(ख) विभक्ति युक्त बहुवचन–** विभक्तियुक्त बहुवचन रूप में शब्द के आगे किसी-न-विभक्ति की आवश्यकता होती है। उसके बिना यह पूर्ण नहीं लगता; जैसे– पौधा-पौधों को/पौधे दरवाज़ा-दरवाज़ों में/दरवाज़ों पर, फल-फलों के/फलों से, मेज़-मेज़ों की/मेज़ों को आदि।

**विशेष–** किसी शब्द का वचन बदलते समय उसके सामान्य बहुवचन रूप को ही लिखना चाहि क्योंकि विभक्तियुक्त बहुवचन रूप का प्रयोग प्रायः वाक्यों में किया जाता है।

### वचन की पहचान

वाक्य में वचन की पहचान दो प्रकार से होती है–

**(क) संज्ञा व सर्वनाम शब्दों के द्वारा–** वाक्य में कर्ता का कार्य कर रहे संज्ञा व सर्वनाम एक या अनेक का बोध कराते हैं; जैसे–

बच्चा पतंग उड़ा रहा है।
यह घोड़ा तेज़ दौड़ेगा।
मैं बाँसुरी बजा रहा था।
(कर्ता के एक होने का बोध)

बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं।
ये घोड़े तेज़ दौड़ेंगे।
हम बाँसुरी बजा रहे थे।
(कर्ता के अ होने का बो

**(ख) क्रियापदों के द्वारा–** आकारांत पुल्लिंग शब्दों (छाता, गमला आदि) को छोड़कर पुल्लिंग शब्दों के एकवचन व बहुवचन रूप समान होते हैं, ऐसे कर्ताओं के साथ उनकी क्रिया को देख उनके वचन की पहचान की जाती है; जैसे–

**एकवचन वाले वाक्य**

यह पेड़ छायादार है।

हाथी नदी में नहा रहा है।

**बहुवचन वाले वाक्य**

ये पेड़ छायादार हैं।

हाथी नदी में नहा रहे हैं।

दोनों वाक्यों के एकवचन व बहुवचन में पेड़ और हाथी शब्द एक ही रूप में प्रयोग किए गए हैं। इनकी क्रियाओं से इनके वचन का पता चल रहा है।

## संज्ञा से अलग अन्य आकारांत पुल्लिंग शब्दों के बहुवचन रूप

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सस्ता – सस्ते | महँगा – महँगे | थोड़ा – थोड़े | काला – काले | अच्छा – अच्छे |
| आया – आए | गया – गए | पहुँचा – पहुँचे | मेरा – मेरे | हमारा – हमारे |

**विशेष–** आकारांत पुल्लिंग शब्दों के बहुवचन रूप में बिंदी का प्रयोग नहीं करना चाहिए; जैसे– बच्चा– बच्चे (सही), बच्चें (गलत), रसगुल्ला– रसगुल्ले (सही), रसगुल्लें (गलत) आदि।

## स्त्रीलिंग शब्दों के लिए

### 'अ' की जगह एँ ( ॅ ) करके

| | | | |
|---|---|---|---|
| बात – बातें | कलम – कलमें | किताब – किताबें | रात – रातें |
| फ़सल – फ़सलें | नहर – नहरें | कतरन – कतरनें | कमीज़ – कमीज़ें |
| हड़ताल – हड़तालें | चादर – चादरें | साँस – साँसें | धड़कन – धड़कनें |
| लहर – लहरें | मूँछ – मूँछें | चट्टान – चट्टानें | झील – झीलें |

### 'आ' के आगे 'एँ' लगाकर

| | | | |
|---|---|---|---|
| माला – मालाएँ | महिला – महिलाएँ | दुआ – दुआएँ | हवा – हवाएँ |
| कविता – कविताएँ | सरिता – सरिताएँ | लता – लताएँ | चिंता – चिंताएँ |
| रचना – रचनाएँ | कन्या – कन्याएँ | घटना – घटनाएँ | शाखा – शाखाएँ |

### 'इ' के आगे 'याँ' जोड़कर

| | | | |
|---|---|---|---|
| मूर्ति – मूर्तियाँ | पंक्ति – पंक्तियाँ | रीति – रीतियाँ | ध्वनि – ध्वनियाँ |
| तिथि – तिथियाँ | लिपि – लिपियाँ | कृति – कृतियाँ | सूक्ति – सूक्तियाँ |
| विधि – विधियाँ | विपत्ति – विपत्तियाँ | शक्ति – शक्तियाँ | समिति – समितियाँ |

### 'ई' को पहले 'इ' करने के बाद 'याँ' जोड़कर

| | | | |
|---|---|---|---|
| अलमारी – अलमारियाँ | सब्ज़ी – सब्ज़ियाँ | रोटी – रोटियाँ | रानी – रानियाँ |
| डाली – डालियाँ | पुत्री – पुत्रियाँ | राखी – राखियाँ | लाठी – लाठियाँ |
| हस्ती – हस्तियाँ | गाली – गालियाँ | मक्खी – मक्खियाँ | बच्ची – बच्चियाँ |
| कठिनाई – कठिनाइयाँ | दवाई – दवाइयाँ | मिठाई – मिठाइयाँ | स्त्री – स्त्रियाँ |
| टोली – टोलियाँ | बोली – बोलियाँ | लकड़ी – लकड़ियाँ | खिड़की – खिड़कियाँ |

## अन्य नियम

### 'उ' के आगे 'एँ' लगाकर–

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऋतु – ऋतुएँ | धातु – धातुएँ | धेनु – धेनुएँ | वस्तु – वस्तुएँ |

### 'ऊ' को 'उ' करने के बाद उसके आगे 'एँ' लगाकर–

| | | |
|---|---|---|
| जूँ – जुएँ | बहू – बहुएँ | लू – लुएँ |

### 'औ' के आगे 'एँ' लगाकर–

| |
|---|
| गौ – गौएँ |

### 'या' को 'याँ' में बदलकर–

| | | |
|---|---|---|
| चिड़िया – चिड़ियाँ | गुड़िया – गुड़ियाँ | बुढ़िया – बुढ़ियाँ |
| पुड़िया – पुड़ियाँ | कुटिया – कुटियाँ | डिबिया – डिबियाँ |

**विशेष–** गुड़ियाएँ/गुड़ियाओं, चिड़ियाएँ/चिड़ियाओं यानी एँ और ओं लगाकर लिखे ऐसे रूप अ
हैं। सामान्य रूप में या को याँ करना चाहिए और विभक्ति वाले रूप में या को यों कर देना चाहि
जैसे– गुड़िया – गुड़ियाँ, गुड़ियों की/को; चिड़िया – चिड़ियाँ/चिड़ियों ने/से आदि

### स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन रूपों में वर्तनी की गलती से कैसे बचें?

स्त्रीलिंग शब्दों का बहुवचन बनाते समय अंत में याँ, एँ ( ॅ ) का प्रयोग किया जाता है; जैसे– द
नदियाँ, कविताएँ, वस्तुएँ, सड़कें, रातें आदि।

### एँ की जगह ऐं लिखने की गलती

एँ की जगह ऐं लिखने की यह गलती बहुत होती है। इसका आपको ध्यान रखना है;

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| जैसे– | कविता – कविताएँ | (सही) | कविताऐं | (गलत) |
| | वस्तु – वस्तुएँ | (सही) | वस्तुऐं | (गलत) |
| | माला – मालाएँ | (सही) | मालाऐं | (गलत) |
| | धातु – धातुएँ | (सही) | धातुऐं | (गलत) |

### गण, जन, वृंद, लोग, सब आदि लगाकर बने बहुवचन शब्द–

दर्शकगण, अध्यापकगण, अतिथिगण, कविगण, यात्रीगण, प्रजाजन, छात्रजन, भक्तवृंद, पक्षीवृंद,
लोग, तुम सब आदि। वाक्य प्रयोग देखिए–

अतिथिगण दीप प्रज्वलित कर रहे हैं।
यात्रीगण कृपया ध्यान दें...।
आप लोग कहाँ जा रहे हैं?
सभी आमंत्रित कविगण मंच पर पधार चुके
भक्तवृंद अपने प्रभु के ध्यान में लीन हैं।

### ओं/यों के साथ विभक्तियुक्त बहुवचन रूप

वस्त्र – वस्त्रों को/की, काँटा – काँटों से/को, व्यक्ति – व्यक्तियों ने/से, साधु – साधुओं के लि
बात – बातों में/से आदि।